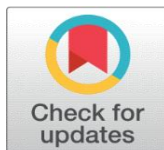
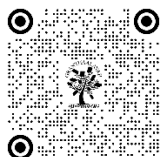


“बरेला” जनजाति की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं एवं गतिशीलता का समाज शास्त्रीय अध्ययन

सुयश सागर बाजपेयी¹

¹विषय विशेषज्ञ (समाजशास्त्र), महाराजा छत्रसाल बूंदेलखंड, विश्विद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)



DOI
[10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.3762](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.3762)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व में जनजातियों के वितरण की दृष्टि से भारत वर्ष में जनजातीय जनसंख्या किसी भी देश से अधिक है। विकास की दृष्टि से भी भारतीय जनजातियों को विभिन्न अवस्थाओं में रखा जा सकता है। आज भी ये लोग सभ्य समाज की तुलना में अत्यधिक पिछड़े हुये हैं।

सन 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 7,26,26,809 है। जिसमें से 1,53,16,784 जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है अर्थात प्रदेश की 21.60 % जनसंख्या आदिवासी है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश में अलीराजपुर प्रथम स्थान पर है। मध्यप्रदेश में कुल '47' जनजातियाँ, उपजनजातियाँ पाई जाती हैं। आदिवासी विकासखण्ड '89' है।

1. ifjp;

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व में जनजातियों के वितरण की दृष्टि से भारत वर्ष में जनजातीय जनसंख्या किसी भी देश से अधिक है। विकास की दृष्टि से भी भारतीय जनजातियों को विभिन्न अवस्थाओं में रखा जा सकता है। आज भी ये लोग सभ्य समाज की तुलना में अत्यधिक पिछड़े हुये हैं।

सन 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 7,26,26,809 है। जिसमें से 1,53,16,784 जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है अर्थात प्रदेश की 21.60 % जनसंख्या आदिवासी है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश में अलीराजपुर प्रथम स्थान पर है। मध्यप्रदेश में कुल '47' जनजातियाँ, उपजनजातियाँ पाई जाती हैं। आदिवासी विकासखण्ड '89' है।

म.प्र. में 93.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार म.प्र. में निवासरत विभिन्न जनजातियों का विवरण इस प्रकार से है:

प्रदेश की आदिवासी जनजातियाँ			
क्र.	जनजाति का नाम	उपजनजाति	निवास क्षेत्र
1.	गौड़	परधान, अगरिया, ओझा, नगारची, सोल्हास	प्रदेश के समस्त जिलों में
2.	भील	बरेला, भिलाला, पटलिया	धार, झाबुआ, खण्डवा, बुरहानपुर, छतरपुर
3.	बैगा	बिझरवारा, नरोतिया, नाहर, भेना, काढ़पोना	मण्डला, बानाघाट, खण्डवा
4.	कोरकू	मेवासीरूमा, नहाला, क्वारी	बुराहनपुर, होशंगाबाद, बैतूल, छिंदवाड़ा
5.	मारिया	भूमिया, भूईहार, पंडो	छिंदवाड़ा, जबलपुर
6.	हल्दा	हल्दी, बस्तारिया, छत्तीसगढ़िया	बालाघाट
7.	कोल	रोहिया, रोठैल	रीवा, सतना, शहडोल, अनूपपुर, सीधी
8.	माड़िया	अबुझमादिया, मडिया	जबलपुर, मंडला, पन्ना
9.	सहरिया		गुना, शिवपुरी, ग्वालियर, विदिशा
10.	सौर, खैरवार	कोंदर, बरेला	छतरपुर, बिलासपुर, मण्डला, सरगुजा
11.	सौर (सऊर)	बरेला	सागर, छतरपुर, पन्ना, दमोह, टीकमगढ़
12.	भतरा		बस्तर
13.	उराव		सरगुजा, रामगढ़
14.	सवर		बिलासपुर, रामगढ़, रामपुर
15.	अगरिया		मण्डला, सरगुजा, सीधी, शहडोल
16.	परधान		सिवनी, बैतूल, छिंदवाड़ा, बालाघाट
17.	कमर		रामपुर
18.	कोरवा		सरगुजा, रामगढ़
19.	धनवार		बिलासपुर, सरगुजा
20.	पनिका		शहडोल, सीधी
कुल योग		20 जनजातियाँ, 27 उपजनजातियाँ	47

2. बरेला जनजाति का सामान्य परिचय

भील शब्द द्रविड़ भाषा के "बील" शब्द से निकला है जिसका अर्थ है "कमान"। तीर कमान के कार्य में निपुण होने के कारण ही यह जनजाति "भील" कहलायी। बरेला जनजाति भील जनजाति की उपजाति है। ये मूलतः झाबुआ (मध्यप्रदेश) जिले के निवासी हैं। बक्सवाहा विकासखण्ड के 04 गाँवों में प्रवास पर आये थे और यही के निवासी बन गये हैं।

वे तीरकमान चलाने में निपुण हैं अन्य जनजाति उनके गाँव में निवास नहीं करती। उनके पारस्परिक सामाजिक संबंध अन्य जनजातियों अच्छे नहीं हैं। जन सामान्य उन गाँवों में जाने से भय महसूस करते हैं।

गाँव में कृषि करते हैं। जंगल में शिकार करते हैं और जंगली लकड़ी इकट्ठा करना, हेतु पत्ता अचार, गुली आदि इकट्ठा करने का कार्य भी करते हैं।

3. छतरपुर जिले में जनजातीय स्थिति

छतरपुर जिले में कुल 08 विकासखण्ड एवं 11 तहसील हैं। इन विकासखण्डों में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा विकासखण्ड राजनगर है। किन्तु जनजातीय आवादी की दृष्टि से बिजावर विकासखण्ड अधिक महत्वपूर्ण है। हालांकि सभी विकासखण्डों में गौड़, सौर व खैरवार, कौंदर जनजातियां निवास करती हैं। किन्तु बिजावर विकासखण्ड में इनका प्रतिशत सर्वाधिक है यही कारण है कि बिजावर विकासखण्ड के किशनगढ़ अंचल को जनजातीय दृष्टि से महत्वपूर्ण के अनुसार "आदिवासी लघु अंचल" के नाम से जाना जाता है। छतरपुर जिले की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 17,62,375 है। तथा निम्नानुसार है।

छतरपुर जिले के अन्य विकासखण्डों में अनुसूचित जनजाति की जनगणना (2011)				
क्र.	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	अनु. जनजाति संख्या	कुल जनसंख्या प्रतिशत
1	गौरिहार	178175	648	0.36
2	लवकुशनगर	165707	2011	1.21
3	नौगांव	191332	989	0.51
4	छतरपुर	239915	6411	2.67
5	राजनगर	216270	13142	6.07
6	बिजावर	142275	22647	15.91
7	बकस्वाहा	80061	10396	12.98
8	बड़ामलहरा	177816	13040	7.33

उपरोक्त समस्त विकासखण्डों में केवल बकस्वाहा जिले में ही "बरेला" जनजाति पाई जाती है।

क्र.	विकासखण्ड	राजगौड़	सौर	खैरवार	कौंदर	बरेला	योग
1	बिजावर	12840	5630	4177	-	-	22647
2	राजनगर	-	-	-	13142	-	13142
3	बड़ामलहरा	-	13040	-	-	-	13040
4	बकस्वाहा	-	8560	-	-	1866	10396
	योग	12840	27200	4177	13142	1866	59225

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि राजगौड़ - बिजावर में, सौर - बिजावर व बड़ामलहरा में, खैरवार - बिजावर में, कौंदर - राजनगर में तथा बरेला केवल बकस्वाहा में निवास करते हैं।

4. अध्ययन का उद्देश्य

म.प्र. में बरेला जनजाति का स्थान धार, झाबुआ, एवं पश्चिमी निमाड़ जिले को माना गया है। सागर संभाग में भी भील जनजाति निवास करती है ऐसा कहीं लेख नहीं है।

1. सागर संभाग में बरेला जनजाति के निवास स्थानों का चिन्हित करना।
2. बरेला जनजाति के धार, झाबुआ जिले से सागर संभाग में प्रवास के कारणों की तलाश करना।
3. उनकी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जानना।
4. शासकीय सुविधाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. प्रवास के फलस्वरूप आये सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन
6. भील व बरेला जनजाति की गतिशीलता का अध्ययन।

5. विषय क्षेत्र

छतरपुर जिले के बकस्वाहा विकासखण्ड के समस्त ग्रामों को अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया जिनमें बरेला जनजाति निवास करती है।

6. निदर्शन एवं अध्ययन पद्धति

जनजातियों के अध्ययन हेतु प्रस्तुत प्रोजेक्ट वर्क में मूलतः दो अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

1. तुलनात्मक पद्धति
2. क्षेत्रीय कार्य विधि

तुलनात्मक अध्ययन वैधानिक अध्ययन का मूल आधार है क्योंकि विज्ञान में तुलना करके निष्कर्ष पर पहुँचना एक अनिवार्यता है। प्रस्तुत अध्ययन में इस पद्धति का उपयोग करने का उद्देश्य सामाजिक जीवन के विभिन्न प्रारूपों की खोज करके उसके अनुसार मानवीय संस्कृति के विकास को समझना है। क्षेत्रीय कार्य विधि के बगैर जनजातियों के जीवन को समझ पाना असंभव ही था। अतः प्रस्तुत अध्ययन में ज्ञान के मौलिक स्रोत वास्तविक जगत को मानकर ही कार्य किया गया क्षेत्रीय कार्य विधि द्वारा लक्ष्यों का संकलन कर उन तथ्यों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रभावित करने का प्रयास किया गया है। जनजातियों में निरक्षरता की समस्या को ध्यान में रखते हुये तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची पद्धति का प्रयोग किया गया है।

7. उपकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य सर्वेक्षण द्वारा प्रारंभिक अवस्था में निम्न उपकल्पनाओं को ध्यान में रखते हैं। अध्ययन कार्य को आगे बढ़ाया गया।

1. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनु. जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के निराकरण हेतु किये गये प्रयास से पर्याप्त परिवर्तन हुये हैं।
2. अनु. जनजातीय साल दर साल अपनी पारिवारिक एक जुटता जैसे मूल गुणों व्यक्तिदादिता के चलते परिवर्तन होते जा रहे हैं।
3. वैवाहिक परम्पराओं में नगरीय एवं बाहरी समाज का प्रभाव हुआ है और दहेज प्रथा जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।
4. अशिक्षा धीरे- धीरे कम हो रही है और वे स्कूल, हॉस्टल जैसे सुविधाओं का लाभ ले रहे हैं।
5. शिक्षा में वृद्धि से सामाजिक, आर्थिक विकास प्रभावित होगा।
6. व्यापारी व बिचौलिये लाभ प्राप्त करते हैं और अनु. जनजाती ऋणग्रस्तता जैसी समस्याओं से उदार नहीं पातें।
7. संचार साधन की सुविधा गाँवों में पर्याप्त नहीं होती जो उनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है।
8. कृषि कार्य उनका मुख्या पेशा है किन्तु प्रकृति पर निर्भर रहने के कारण जनजाती विशेष लाभ प्राप्त नहीं कर पाती है।

8. निष्कर्ष

अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैं-

1. जनजातिया छतरपुर जिले के विकासखण्डों में बिजावर, राजनगर, बड़ामलहरा, बकस्वाहा, में निवास करती हैं। बिजावर के "किशनगढ़" को आदिवासी अंचल के नाम से जाना जाता है।
2. बकस्वाहा क्षेत्र में बरेला व सौर जनजाति निवास करती है।

3. बरेला आदिवासी पिछले चार दशक पूर्व झाबुआ जिले से कृषि व आवासीय भूमि कम होने के कारण यहाँ आकर बस गये थे। कौंदर, सौर, राजगौड़ इस क्षेत्र में अनेकों पीढ़ियों से यहाँ निवास करते हैं।
4. बरेला आदिवासियों में धार्मिक संक्रमण नहीं है। इसका प्रमुख कारण उनका नगरीय क्षेत्र से काफी दूर निवास करना है तथा पलायन नहीं करना है।
5. बरेला परिवारों के एक आवास काफी दूर 2 होते हैं। पर्याप्त सफाई व्यवस्था होती है। दीवारों का निर्माण लीन्टाना की टहनियों में मिट्टी का लेप करके अनेकों आकृतियों सहित बनाई जाती है, उनका कहना है कि लीन्टाना दीवारों में दीमक लगने से रोकता है।
6. बरेला जनजाति "दानाबाबा" की पूजा करते हैं वर्ष में एक बार मुर्ग की बलि देते हैं। अन्य आदिवासियों द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं की ही पूजा की जाती है।
7. बरेला के अतिरिक्त अन्य जनजातियों कृषि कार्य, कृषि श्रमिक, वन संपदा से प्राप्त वस्तुओं को इक्ठा करना, अन्य क्षेत्रों में मजदूरी करना जैसे आर्थिक कार्य किये जाते हैं किन्तु बरेला आदिवासियों द्वारा केवल कृषि कार्य को ही आर्थिक कार्य के रूप में किया जाता है।
8. छतरपुर जिले की सभी जनजातियाँ आज भी संयुक्त परिवारों में ही करती हैं।
9. आदिवासी समाज में संगठन का प्रमुख आधार ग्राम और जनजाति है। सामाजिक संबंधों का आधार रक्त संबंध व निवास स्थान है।
10. गौड़ खैरवार, सौर तथा कौंदर जनजाति में अशिक्षा का प्रतिशत 98 प्रतिशत है। शिक्षा के प्रति बच्चों का रुझान न के बराबर है।
11. बाल विवाह प्रथा चलन में थी किन्तु वर्तमान में वे जागरूक हुये हैं और कौंदर व बरेला जनजाति को छोड़कर अब वे बाल विवाह नहीं करते हैं।
12. बच्चे आर्थिक कार्यों में सहयोगी होते हैं। अतः वे स्कूल जाने, अध्ययन में रुचि रखने की बजाय माता- पिता के साथ सहयोग करते हैं।
13. शिक्षकों की कमी भी अशिक्षा का कारण है। अधिकांश शिक्षक दूसरे नगरों में रहकर रोज आते जाते हैं। अतः शिक्षा कार्य के प्रति बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते।

सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव

1. कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाये जाने की अत्यंत आवश्यकता है। आदिवासियों का प्रमुख कार्य कृषि है। अतः चिन्हित क्षेत्रों में Value Addition Center बनाकर कृषि कार्य को उन्नत बनाने की आवश्यकता है। जिससे न केवल पलायन रुकेगा अपितु कृषि के प्रति आकर्षण भी बढ़ेगा।
2. ज्यादातर सामाजिक, आर्थिक समस्याओं की जड़ पूँजी प्रधान विकास का मॉडल है। उसके स्थान पर कृषि प्रधान विकास के मॉडल को आधार बनाना चाहियें।
3. कृषि कार्य हेतु जल प्रबंधन अत्यंत जरूरी है क्योंकि ज्यादातर आदिवासी जल समस्या के कारण ही ग्रीष्म ऋतु शुरू होते ही पशुओं को छोड़ देते हैं और आसपास के क्षेत्रों में कार्य की तलाश करते हैं।
4. अध्ययन करने के उपरांत पाया कि शासकीय योजनाओं के पूर्णरूप से सफल न होने के तीन प्रमुख कारण
 - a. सामाजिक कारण
 - b. आर्थिक कारण
 - c. राजनैतिक कारण

ग्रामीण विकास योजनाओं की सफलता हेतु सुझाव

अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष सामने आया कि ज्यादातर ग्रामीण विकास योजनाओं में शत प्रतिशत सफलता दिये जा सकते हैं।

योजना निर्माण के पूर्व

1. स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान रखना सर्वेक्षण, गोष्ठी तथा ग्राम सभा में विचार विमर्श के द्वारा स्थानीय लोगों से बातचीत करने के बाद ही योजना निर्माण की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिये। रूपरेखा तय करने में प्रमुख व्यक्तियों के साथ जनसामान्य को भी महत्व दिया जाना चाहिये।
2. पर्याप्त धनराशि किसी भी योजना को सफल बनाने के लिये पर्याप्त धनराशि का होना अत्यंत आवश्यक है। विविध योजनाओं का एक साथ क्रियान्वित होना भी धनराशि की उपलब्धता को कम करता है। अतः धन की उपलब्धता के आधार पर योजनाओं को क्रियान्वित किया जाना अधिक बेहतर होगा।

योजनाओं के क्रियान्वयन के उपरांत

1. स्थानीय लोगों की सक्रीय भागीदारी हेतु प्रयास
2. योजना अधिकारी/ सरपंच व ग्रामीणों में परस्पर विश्वास
3. शासकीय अनुदान का उचित प्रयोग
4. सही व्यक्तियों को योजना की पूर्ण जानकारी से अवगत कराना
5. एक योजना की असफलता दूसरी योजना की सफलता को अप्रलक्ष रूप से प्रभावित करती है।
6. असमाजिक तत्वों पर नियंत्रण
7. युवा शक्ति को विकास कार्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिये
8. प्रवास को रोकना
9. भ्रष्टाचार को रोकने हेतु प्रयास
10. पुरस्कार एवं दण्ड

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

- Shivkant Singh, Rural Development Policies & Programmes, Nottam Book Centre 4221 Daryaganj New Delhi
- डॉ. एम.एम. लवानिया, ग्रामीण स.शा., कॉलेज बुक डिपो जयपुर
- डॉ. ओम प्रकाश जोशी, ग्रामीण व नगरीय स.शा., कॉलेज बुक डिपो जयपुर
- डॉ. एम.एम. लवानिया & शशी के जैन, Sociology of Tribes in India, कॉलेज बुक डिपो जयपुर
- डॉ. शिवकुमार तिवारी एवं श्री कमल शर्मा, म.प्र. की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
- डॉ. हरिश्चन्द्र उप्रेती, भारतीय जनजातियाँ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- डॉ. एम.एम. लवानिया एवं शशी के जैन, भारत में जनजातियों का समाज शास्त्र रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
- Dr. H.C. Willy, Tribes of Central Asia: from the black mountain to waziristan, Adarsh Books Delhi
- Dr. V.K. Shrivastava, Tribes Scenario of M.P. & Chhattisgarh, Sharon Publication, Bhopal
- विजय शंकर उपाध्याय एवं विजय प्रकाश शर्मा, भारत की जनजातियाँ संस्कृति, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
- प्रेम नारायण शर्मा एवं संजीव कुमार झा, महिला सशक्तीकरण एवं समग्र विकास भारत बुक सेन्टर, लखनऊ

रमणिका गुप्ता, आदिवासी विकास एवं विस्थापन राधाकृष्णन प्रकाशन, प्रायवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
डॉ. धर्मवीर महाराज एवं डॉ. कमलेश महाराज, जनजातीय समाज का स.शा., विवेक प्रकाशन, दिल्ली
नदीम हसनैन, जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली
डॉ. रमेश चौबे एवं डॉ. वन्दना शर्मा, सामाजिक सांस्कृतिक मानव विज्ञान, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
रिपोर्ट क्षेत्रीय औद्योगिक अनुसंधान केन्द्र, औद्योगिक और वानिकी वि.वि. किनौर हि.प्र. कुरुक्षेत्र प्रकाशन हाऊस, नई दिल्ली
110001
रोजगारन्मुखी प्रशिक्षण नीति - पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, मंत्रालय बल्लभ भवन, भोपाल दि. 01.11.2007
म.प्र. के आदिवासी संस्कृति - सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय म.प्र.द्वारा प्रकाशित एवं विकास
मुरिया जनजाति - सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय म.प्र. द्वारा प्रकाशित
छेकर, हेमन्त - जनजातीय विकास योजनायें, समस्या एवं समाधान, पत्रिका वन्यजाति

WEBSITE

<http://www.tribal.nic.in>
<http://www.mp.gov.in/tribal/>
www.mp.gov.in/tribal/MP Tribal Finance and Development Corporation bhopa;\1
<http://www.nrega.nic.in/National Rural & Employment Guarantee act.>
<http://www.Mahatma-Gandhi-Scheme-AP-MGNREGA-Indi.National-Rural-Employment-Guarantee->
<http://www.chhatarpur.nic.in>